



फसल घेरा : क्या है रहस्य ?

अनिल कुमार सिंह



“ खड़ी फसल के एक ऐसे क्षेत्र को जो इस तरह से समतल एवं व्यवस्थित किया जाता है कि वो वृत्त, अंडाकार, विशेष आकार या जटिल ज्यामितीय रूप में दिखाई दे, फसल घेरा कहते हैं। फसल घेरा का निर्माण प्रायः गर्मियों के मौसम में गेहूँ, जौ, गन्ना, राई, मक्का, अलसी, या सोयाबीन के खेत में होता है। लोकप्रिय धारणा के विपरीत, फसल घेरा एक आधुनिक घटना नहीं है, अपितु विश्व में सर्वप्रथम फसल घेरा हॉलैंड में वर्ष 1590 में दिखाई दिया था। 17 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के शैक्षणिक ग्रंथों में उनका उल्लेख किया गया है। 1970 से पहले 200 से अधिक मामलों की रिपोर्ट की गई है। 1980 के दशक की शुरुआत में, फसल घेरा के बारे में समाचारों में वृद्धि हुई, क्योंकि प्रत्येक गर्मियों में बहुतायत में फसल घेरा दिखाई देते थे। बहुत सारे वैज्ञानिक मानते हैं कि फसल घेरा का निर्माण खड़ी फसल के पौधों के साथ प्रकाश, ध्वनि और चुंबकत्व ऊर्जा के हस्तक्षेप के कारण होता है। कुछ लोगों का मानना है कि फसल घेरा एलियन के संदेश हैं, जो हमारे साथ संवाद करने की कोशिश कर रहे हैं। क्या यह संभव है? क्या इसे इतनी आसानी से स्वीकार या अस्वीकार किया जा सकता है... ? ”



गोलाकार फसल घेरा का हवाई दृश्य

या त्रिकोण, वर्ग, गणितीय पैटर्न या विशेष ज्यामितीय रूप में बनाया जाता है। परन्तु कभी-कभी यह संरचना चक्र के रूप में भी नहीं होता है। अक्षर की तरह भी फसल घेरा देखे गए हैं। सेरोलॉजिस्ट वह व्यक्ति है, जो फसल घेरा या फसल वृत्त का अध्ययन करता है।

कैम्ब्रिज अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार फसल घेरा “फसलों के क्षेत्र में एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ फसलों को एक नियमित पैटर्न में सपाट बनाया गया हो, अक्सर एक सर्किल या श्रृंखला का एक चक्र होता है। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि फसल घेरा का निर्माण एलियंस (दूसरे ग्रह के प्राणी) द्वारा किया गया है।

फसल घेरा का इतिहास

फसल घेरा दुनिया भर में 29 देशों में विशेषकर कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, हॉलैंड, हंगरी और ऑस्ट्रेलिया में



गोलाकार फसल घेरा का हवाई दृश्य

दिया था। 1960 और 1970 के दशक में, फसल घेरा के बारे में कई रिपोर्टें मिली थीं। 1980 के दशक की शुरुआत में, फसल घेरा के बारे में समाचारों में वृद्धि हुई क्योंकि प्रत्येक गर्मियों में दर्जनों फसल घेरा दिखाई देती थीं। फसल घेरा की अवधारणा डौग बोवर एवं डेव चोरले के द्वारा 1970 के दशक के अंत में

प्रतिपादित की गई। परन्तु फसल घेरा नामक शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम कॉलिन एंड्रयूज द्वारा 1980 के दशक में किया गया था, जो कि अब काफी प्रचलित है। डौग बोवर और डेव चोरली ने कहा कि वे ऑस्ट्रेलियाई किसान से प्रेरित थे, जिसने दावा किया था कि उसने पहले

फसल घेरा क्या है?

फसल घेरा खेतों में बना प्राकृतिक या कृत्रिम बनाया गया एक विशेष आकार या पैटर्न की ज्यामितीय संरचना है। यह खास करके गर्मियों के समय आमतौर पर अनाज की फसलों गेहूँ एवं जौ की फसलों में प्रायः बनते देखा गया है। हालांकि फसल घेरा सोयाबीन, अलसी, आलू, गन्ने, सरसों जैसी अन्न फसलों में भी बने हुये देखे गये हैं। वस्तुतः यह फसल घेरा एक पैटर्न है जो एक खेत में खड़ी फसल के कुछ हिस्से को धरती पर लिटा कर, झुका कर या काट करके समतल करके गोलाकार, अंडाकार, मंडलियों की एक श्रृंखला,



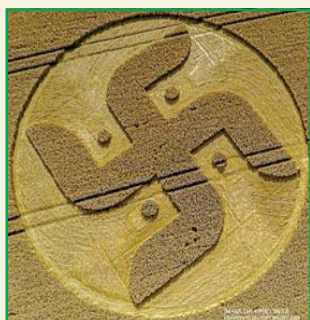
गोलाकार फसल घेरा का हवाई दृश्य



भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना, बिहार

प्रायः देखे गए हैं। विश्व में सर्वप्रथम फसल घेरा हॉलैंड में वर्ष 1590 में दिखाई

एक यूएफओ देखा फिर कुछ देर बाद



स्वास्तिक को प्रदर्शित करती एक फसल घेरा का हवाई दृश्य

दलदली नरकट के चपटे चक्र का रूपान्तरण हुआ, जो कि बाद में ट्यूलरी तश्तरी घोंसले रूप में प्रसिद्ध हुआ। इतिहास के पन्ने में नजर डाले तो पता चलता है, कि इसका जिक्र 1686 में, ब्रिटिश प्रकृतिवादी रॉबर्ट प्लॉट ने 'द नेचुरल हिस्ट्री ऑफ स्टैफोर्ड—शायर' में मशरूम के छल्ले या चाप पर सूचना दी। फसल घेरा के शौकिया वैज्ञानिक जॉन रैंड ने 1880 में नेचर के संपादक को लिखे अपने पत्र में बताया था कि किस तरह हाल ही में एक तूफान ने एक खेत में चपटी फसलों के कई घेरे बना दिए थे। सन् 1932 में, पुरातत्वविद् ई सी कर्वेन ने चिचेस्टर के पास स्टॉटन डाउन में एक खेत में चार काले छल्ले देखे, लेकिन वो केवल एक ही छल्ले की जांच कर सके और यह पाया की एक वृत्त जो की जौ के खेत में बना था, उसे नीचे गिराया गया था, जबकि आंतरिक क्षेत्र को काट कर गिराया गया था। 1960 में, टुल्ली, क्वींसलैंड, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा में, यूएफओ के देखे जाने और तत्पश्चात दलदल एवं गन्ने के खेतों में कई तरह वृत्त निर्माण की रिपोर्टें मिलीं। 1963 में, शौकिया खगोल वैज्ञानिक पैट्रिक मूर ने विल्टशायर के एक आलू के खेत में एक गड्ढा देखा एवं उन्होंने माना कि यह फसल वृत्त शायद एक अज्ञात उल्का पिंड के कारण हुआ था। साथ ही साथ उन्होंने आस-पास के गोहूँ के खेतों में, कई गोलाकार और अण्डाकार क्षेत्र थे, जहाँ गोहूँ चपटा था। जो कि 'सर्पिल चपटे' का प्रमाण था। उन्होंने सोचा कि यह फसल वृत्तहवा की धाराओं के प्रभाव के कारण बने हो सकते हैं, क्योंकि फसल वृत्त गड्ढे की ओर बढ़ते थे। हालांकि खगोलशास्त्री ह्यूग अर्नेस्ट बटलर ने इसी तरह के क्रेटरों का अवलोकन किया और कहा कि

वास्तविक एवं नकली फसल घेरा की पहचान

वास्तव में वास्तविक फसल घेरा के पीछे क्या निहित है? वास्तविक संरचनाओं में तने टूटे हुए नहीं होते हैं, बल्कि सामान्य रूप से जमीन से लगभग एक इंच और पौधे के पहले नोड के पास होते हैं। विशेष मामलों में, तने बीज के शीर्ष से छह इंच झुकते हैं। वास्तविक फसल चक्र पूरी तरह से गोल नहीं हैं, लेकिन थोड़ा अण्डाकार उनके किनारों को चपटे फसल से क्रिस्टली परिभाषित किया जाता है, जैसे कि एक कम्पास के साथ खींचा जाता है, और सर्जिकल परिशुद्धता के साथ पैदा होता है।



वास्तविक फसल घेरा में पौधे टूटते नहीं हैं बल्कि टेढ़े हो जाते हैं।

पादप जीव वैज्ञानिक इससे चकित हैं, और यह वास्तविक घटना की पहचान करने का एकमात्र तरीका है, क्योंकि नकली फसल घेरा जो कि एक धोखा एक जालसाजी है, के लिए फसल को जमीन पर समतल करने के लिए एक तख्त या बगीचे के रोलर की आवश्यकता होती है, जिससे पौधों को स्पष्ट नुकसान होता है।

इस तरह की विशेषताएं चकमा देने वाले तर्क को हरा देती हैं। वास्तविक फसल घेरा वाले खेत की कटाई के एक साल बाद और खेत की जुताई और फिर से बोए जाने के बाद भी फसल घेरा संरचनाओं की ऊर्जा छाप एवं उनके भौतिक निशान जल्दी से गायब नहीं होते।



रंगोली को प्रदर्शित करती एक फसल घेरा का हवाई दृश्य

वे आकाशीय बिजली के हमलों की वजह से थे। उदाहरण के लिए, 8 अगस्त 1967 को कनाडा के दुहामेल, अल्बर्टा में एक खेत में तीन घेरे पाए गए। राष्ट्रीय रक्षा जांचकर्ताओं के विभाग ने निष्कर्ष निकाला कि यह कृत्रिम था लेकिन यह नहीं कह सकता कि उन्हें किसने या कैसे बनाया? सबसे प्रसिद्ध मामला 1966 में टुल्ली 'तश्तरी घोंसला' है, जब एक किसान ने कहा कि उसने एक दलदल से 30-40 फीट (12 मी.) तश्तरी के आकार का शिल्प वृद्धि देखी और फिर उड़ गया। जाँच करने पर उन्होंने लगभग 25 फीट चौड़ा 32 फीट लंबा गोलाकार इलाका पाया, जहाँ घास घेरे में पानी के स्तर तक दक्षिणावर्त वक्रों में चपटी थी और कीचड़ से उखाड़ दिया गया था।

फसल घेरा का कर्मिक विकास

वर्ष 1980 के आसपास गंभीर रूप से फसल घेरा बनने की घटना पर ध्यान दिया गया। मुख्य रूप से दक्षिणी इंग्लैंड में, जहाँ 90% डिजाइनों की सूचना है। फसल घेरा मुख्य रूप से छल्ले के साथ और सेल्टिक क्रॉस पर विविधताओं के रूप में दिखाई दिया। हालाँकि, 1980 के दशक के उत्तरार्ध में उन्होंने सीधी रेखाएँ विकसित कर लीं, जिससे दुनिया में हालांकि पवित्र स्थलों पर पाए जाने वाले पेट्रोग्लिफ्स के विपरीत पिक्टोग्राम नहीं बन पाए। वर्ष 1990 के बाद फसल घेरा डिजाइन तेजी से जटिलता में विकसित हुए। अब क्वांटम भौतिकी में चतुर्थ आयामी प्रक्रियाओं को व्यक्त करने वाले कंप्यूटर जनित दृश्यों की नकल करते हुए फसल घेरा का दिखाई देना आम है। कालान्तर में फसल घेरा की संख्या और आकार में वृद्धि हुई। पूरे विश्व से आज तक 10,000 से अधिक फसल घेरा की सूचना प्राप्त हो चुकी है। कुछ



फसल घेरा के आंतरिक का दृश्य

फसल घेरा 200,000 वर्ग फुट जितने बड़े हैं।

फसल घेरा कब बनते हैं ?

फसल घेरा आम गर्मियों के दिनों में सुबह 2-4 बजे के मध्य में बनते हैं, पारंपरिक रूप से अंग्रेजी वर्ष की सबसे छोटी शाम के दौरान जब अंधेरा रहता है तब फसल घेरा का निर्माण बहुतायत में होता है। वर्ष 1989 में निगरानी परियोजना के दौरान एक जापानी टीवी चालक दल ने सुबह के शुरुआती घंटों में दिखाई देने वाले फसल घेरा को फिल्माया, जिसमें पंद्रह सेकंड से कम समय तक चलने वाली ऊर्जा की एक भंवर गति दिखाई गई। सृजन की इतनी तेज दर ने अप्रकाशित प्रत्यक्षदर्शी रिपोर्ट की पुष्टि की। वर्ष 1996 में स्टोनहेंज में, एक पायलट ने 4.15 बजे उड़ान भरते हुए कुछ भी असामान्य नहीं होने की सूचना दी, फिर भी 15 मिनट बाद एक दूसरे पायलट ने जूलिया सेट कंप्यूटर फ्रैक्टल जैसा दिखने वाला यह 900 फीट का बड़ा फसल घेरा का वर्णन किया जो कि 149 वृत्तों एवं एक सर्पिल वक्र के साथ संरेखित थे।

फसल घेरा को किसने बनाया?

पश्चिमी मीडिया द्वारा गलत बयानी कि सभी फसल घेरा डॉग और डेव नामक दो व्यक्तियों द्वारा उत्पन्न किए गए थे, जो तथ्यात्मक रूप से सही नहीं हैं। क्योंकि कभी-कभी, सरकारें भी अस्पष्टीकृत घटनाओं में जनमत को 'डिबंकिंग' द्वारा नियंत्रित करने की कोशिश करती हैं (अमेरिकी सरकार द्वारा विकसित एक तकनीक) यह विधि बहुत प्रभावी है, क्योंकि यह बड़े पैमाने पर नियंत्रण के दो असाधारण सरल साधनों का उपयोग करती है, अर्थात् उपहास और भय। लेकिन केवल तभी जब आप टेलीविजन और समाचार पत्रों पर बताई गई हर बात को मानने के लिए तैयार हो, खासकर तब जब टीवी कार्यक्रम वैज्ञानिक या

तथ्यात्मक डेटा को दबाते हैं। हालाँकि, यह पता चला है कि डग और डेव नामक कहानी ब्रिटिश रक्षा मंत्रालय में उत्पन्न हुई है। उस सरकारी संस्थान में एक उच्च पदस्थ मुखबिर द्वारा आपूर्ति किए गए साक्ष्य ने सुझाव दिया कि ब्रिटिश सरकार ने फसल चक्रों में बढ़ते विश्वास को रोकने के लिए दो व्यक्तियों को लगाकर इस घटना को बदनाम करने का हर इरादा किया था (पूर्ण कहानी राज में प्रकट होती है)। लेकिन जब बाद में उनकी कथित कृतियों के सबूत देने के लिए सामना किया गया, तो डग और डेव ने अपनी कहानी बदल दी, यहाँ तक कि पिछले दावों को उलट दिया। वे वास्तविक घटना में पाई गई असामान्य विशेषताओं की व्याख्या भी नहीं कर सकते थे। कई मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, 1992 तक के सभी फसल घेरा डग और डेव नामक दो बुजुर्गों द्वारा बनाए गए थे। डग और डेव की भ्रामक जोड़ी के जीवित सदस्य ने 1998 में, हालाँकि, ब्रिटिश अखबारों में एक अविश्वसनीय बात कही कि उन्हें 'अज्ञात शक्ति द्वारा निर्देशित' किया गया था।

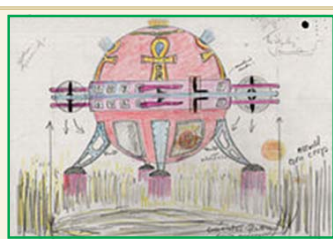
कौन बनाता है फसल घेरा?

फसल घेरा का निर्माण क्यों और कैसे होता है ? या क्या इसे कोई व्यक्ति विशेष यह या समूह बनाता है? इस पर सेरोलॉजिस्ट एवं विशेषज्ञ का एक मत नहीं है, क्योंकि किसी ने इन्हें अपनी आंखों से बनते हुये नहीं देखा या देखने का अकाट्य साक्ष्य मौजूद नहीं किया है।

फसल घेरा बनने के संभावित कारण



1678 का पंपलेट जिसमें शैतान द्वारा फसल कटे जाने का विवरण चित्र के साथ प्रकाशित किया गया है।



फसल घेरा बनाते हुए वायुयान का चित्र जिसे यूनाईटेड किंगडम के रक्षा मंत्रालय को 1998 में भेजा गया था।

1. मौसम में अचानक परिवर्तन से
2. अदृश्य शक्तियों द्वारा
3. भूगर्भीय हस्तक्षेप एवं रेडियोधर्मिता द्वारा
4. विद्युत चुम्बकीय शक्तियों द्वारा
5. ध्वनि की शक्तियों द्वारा

1. मौसम में अचानक परिवर्तन से

मौसम में अचानक परिवर्तन आने से भी ऐसा फसल घेरा बन सकता है विशेषकर समुद्री तूफान एवं बावन्डर आने पर या फिर आकाशीय बिजली गिरने से भी ऐसा होने की संभावना प्रबल हो जाती है। शौकिया खगोल वैज्ञानिक पैट्रिकमूर ने बताया कि फसल वृत्त हवा की धाराओं के प्रभाव के कारण बने हो सकते हैं। भौतिक शास्त्र वैज्ञानिक स्टेफन हाकिंस का मानना था कि फसल घेरा हवा के वोरटेक्स गति के कारण बनते हैं। खगोलशास्त्री ह्यूग अर्नेस्ट बटलर ने फसल घेरा का अवलोकन किया और कहा कि वे आकाशीय बिजली के हमलों की वजह से बने थे।

2. अदृश्य शक्तियों द्वारा

कुछ सिद्धांतकारों द्वारा सुझाया गया है कि फसल घेरा का निर्माण अस्पष्ट प्राकृतिक कारणों से होता है या दूसरे ग्रह के प्राणियों (एलियन) द्वारा किया जाता है। ब्रिटिश कोलंबिया और ऑस्ट्रेलिया के कुछ अस्सी प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया है कि वे कहते हैं कि फसल घेरा का गठन बीस सेकंड के भीतर हुआ है। इन गवाहों का वर्णन है कि प्रकाश की गरमा-गरम या चमकीले रंग की गेंदों को देखना जो या तो फसल घेरा से पहले होती है या फसल घेरा निर्माण में बहुत सक्रिय रूप से शामिल होती है कुछ मामलों में प्रकाश की बिम्ब एक क्षेत्र पर उतरी और पंद्रह सेकंड से भी कम समय में फसल को ज्यामितीय तरंग में बदल दिया।

3. भूगर्भीय हस्तक्षेप/रेडियोधर्मिता द्वारा

शायद फसल घेरा का निर्माण कुछ पौधों

द्वारा भूमिगत जीवन को प्रभावित करने से हुआ है। उदाहरण के लिए, उस साइट पर विस्फोट करने वाले बमों ने जमीन को जहर दिया हो सकता है, जिससे सालों बाद फसल घेरा बन सकता है। क्योंकि फसल घेरा के भीतर से ली गई मिट्टी के नमूने इसकी क्रिस्टलीय संरचना और खनिज संरचना में परिवर्तन दिखाते हैं। विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि इस तरह की प्रक्रिया के लिए 150°C के तापमान की आवश्यकता होती है। यह उप-मृदा दबाव आमतौर पर हजारों साल से मौजूद है। साक्ष्य यहाँ तक है कि वास्तविक फसल घेरा के अंदर मिट्टी में चार गैर-स्वभाविक रूप से उत्पन्न, अल्पकालिक रेडियोधर्मी आइसोटोप मौजूद होते हैं (ये तीन या चार घंटे के बाद फैलते हैं, जिससे कोई प्रतिकूल दुष्प्रभाव नहीं होता है) वास्तव में उनके और आसपास की मिट्टी पकी हुई प्रतीत होती है।

4. विद्युत चुम्बकीय शक्तियों द्वारा

यह वैज्ञानिक रूप से प्रलेखित किया गया है कि गर्मी और इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक आवृत्ति होने के साथ, फसल घेरा पृथ्वी के चुंबकीय मार्ग के ऊर्जा के प्रतिच्छेदन बिंदुओं पर दिखाई देते हैं। इस प्रकार एक फसल घेरा का आकार और क्षेत्रफल आमतौर पर उनके स्वरूप के समय इन शनोड बिंदुओं के क्षेत्र द्वारा निर्धारित होता है। फसल घेरा विद्युत और चुंबकीय ऊर्जा ब्रेनवेव पैटर्न का एक नमूना है, क्योंकि मानव शरीर स्वयं विद्युत-चुंबकीय है। फसल घेरा लोगों के जैव-लय को प्रभावित करने के लिए जाने जाते हैं। फसल घेरा स्थानीय विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र को बदल देते हैं। अक्सर



फसल घेरा बनने से पूर्व प्रकाश पुंज का प्रकट होना

कम्पास उत्तर और कैमरे और सेलुलर फोन की खराबी का पता नहीं लगा सकते हैं। इसमें शामिल फ्रीक्वेंसी हेलीकॉप्टर और विमान उपकरण को प्रभावित करने के लिए जाने जाते हैं। रेडियो आवृत्ति उनके स्थान के अंदर स्पष्ट रूप से भिन्न होती है। यहाँ तक कि पूरे गाँव में कार की बैटरियाँ सुबह डिस्चार्ज मिलती हैं। चूंकि वास्तविक फसल घेरा पृथ्वी के चुम्बकीय ऊर्जा धाराओं के साथ बिंदुओं को पार करते हैं, इसलिए वे स्थानीय साइटों के ऊर्जा पैटर्न को प्रभावित करते हैं, जो समान सिद्धांतों पर बनाए गए थे।

5. ध्वनि की शक्तियों द्वारा

फसल घेरा भी मानव श्रवण सीमा के ऊपर अल्ट्रासाउंड के अस्तित्व को दर्शाते हैं। अनुसंधान और प्रयोगशाला परीक्षणों से पता चलता है कि इन्फ्रासाउंड (20 हर्ट्ज से नीचे की ध्वनि) इस तरह के प्रभाव का उत्पादन करने में सक्षम है। उच्च-दबाव वाला अल्ट्रासाउंड एक नौनों सेकंड में जमीन के अंदर पानी को उबालने में सक्षम है। इस दबाव के कारण पानी भाप बन जाता है। यही कारण है कि किसानों द्वारा यह सूचित किया जाता है कि एक नए फसल घेरा पर के भीतर से भाप को उठते हुए देखते हैं। यह प्रक्रिया तनों के साथ सतह को उठती है। स्थानीय जल तालिका को बदलने के लिए स्थानीय ताप का जबरदस्त अनुप्रयोग भी जिम्मेदार हैं, क्योंकि इसके कारण सतह और उप-सतही जल के लाखों गैलन वाष्पित होते हैं। कभी-कभी फसल की अपनी ध्वनियों के प्रभाव से भी फसल घेरा का निर्माण होता है। फसल घेरा ध्वनियों पर पड़ने वाले प्रभाव का नासा द्वारा मूल एवं कृत्रिम रूप से विश्लेषण किया गया था, और यह पाया गया था कि 5.2 केएचजेड की एक हार्मोनिक आवृत्ति का फसलों पर असर हुआ था। वास्तविक फसल चक्र यूक्लिडियन ज्यामिति पर आधारित अस्पष्ट प्रमेयों को स्पष्ट करते हैं।

क्यों नहीं बनाता फसल घेरा भारत में?

प्रायः फसल घेरा ठंडी जलवायु वाले देश / क्षेत्र में कुछ विशेष परिस्थितियों में ही दिखाई देता है, जैसे कि फसल घेरा बड़े भूभाग पर बनाता है, क्योंकि इस संरचना का जहाँ भी निर्माण होता है वह भूभाग कई किलोमीटर तक पूर्णतः खुला होना चाहिए। यही कारण है कि अधिकांशतः फसल घेरा सुदूर एकांत में एवं सूनसान स्थान पर ही निर्मित होते हैं। गौर करने



ध्वनि की शक्तियों द्वारा फसल का मुड़ना

वाली बात यह भी है कि फसल घेरा प्रायः गर्मी के मौसम में गेहूँ, जौ, सरसों, गन्ना, अलसी, आलू आदि फसलों में ही दृष्टिमान होता है, जहाँ पर एक फसली खेती का क्षेत्रफल हजारों हेक्टेयर में होता है। ज्ञात हो कि भारत में अत्यधिक जनसंख्या घनत्व के कारण जोतो का आकार तुलनात्मक रूप से छोटा ही नहीं अपितु फसल सघनता एवं फसल विविधता भी पायी जाती है, साथ ही साथ, फसल घेरा निर्माण में भाग लेने वाली प्रायः सभी फसले हमारे देश में शीत ऋतु में उगाई जाती हैं। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारतीय जलवायु एवं परिस्थितियों का निर्माण होना थोड़ा मुश्किल सा प्रतीत होता है।

निष्कर्ष— वस्तुतः फसल घेरा के निर्माण को लेकर 'जितने मुँह उतनी बातें' वाली बात चरित्रार्थ होती है। फसल घेरा का इतिहास, इसका क्षेत्रफल, व्यापकता, विविधता एवं इसके बनने में लगने वाले समय के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह मनुष्यों द्वारा निर्मित तो नहीं हो सकता है। क्योंकि जब भी कोई विशेष शक्ति से सम्पन्न पराग्रही विमान किसी क्षेत्र विशेष पर उतरेगा तो फसल घेरा बनने हेतु जितनी भी शक्तियों का प्रतिपादन किया गया है, यथा मौसम में अचानक परिवर्तन, विद्युत चुम्बकीय शक्तियों द्वारा, ध्वनि की शक्तियों द्वारा, भूगर्भीय हस्तक्षेप एवं रेडियोधर्मिता आदि, स्वतः ही निर्मित हो जाएंगी। अतः उपरोक्त विवेचना इस तरह साफ संकेत करती है कि फसल घेरा का निर्माण प्राकृतिक कारकों द्वारा ही होता है। यह अलग बात है कि हम आज तक फसल घेरा का निर्माण होते हुए नहीं देख पाये हैं और यह आज तक रहस्य ही बना हुआ है। इसके बारे में अभी और शोध की आवश्यकता है।